हिम्मत और जिन्दगी

लेखक परिचय :

रामधारी सिंह 'दिनकर'

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म सन् 1908 ई. में बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया गाँव में हुआ था। इनके पिता किसान थे। दिनकरजी लम्बे समय तक भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार रहे। उनकी मृत्यु सन् 1974 में हुई।

मिट्टी की ओर, अर्धनारीश्वर, उजली आग, हमारी सांस्कृतिक एकता, वेनी के फूल इनकी प्रमुख गद्य रचनाएँ हैं। पद्य रचनाओं में प्रणभंग, रेणुका, हुंकार, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी तथा दिल्ली प्रमुख है।

दिनकर जी की रचनाओं में सामाजिक जीवन एवं राष्ट्रीय समस्याओं का समावेश है। विचारों की स्पष्टता व अभिव्यक्ति की सहजता इनकी कृतियों की विशिष्टता है। इनकी भाषा शुद्ध खड़ी बोली है। शब्द चयन अत्यंत प्रभावशाली व भावानुकूल है। तत्सम शब्दों का प्रयोग रचना और प्रवाह में बाधक नहीं है।

आधुनिक काल में स्वतंत्रता एवं देशभक्ति की भावना स्पष्ट करने वाले साहित्यकारों में इनका विशिष्ट स्थान है।

हिम्मत और जिन्दगी एक विचारोत्तेजक निबन्ध है। उसमें अनेक उदाहरणों द्वारा मनुष्य को श्रम और परोपकार करने की सीख दी गई है। लेखक के अनुसार जीवन में धूप में तपने वाला ही चाँदनी का आनन्द ले सकता है। सुख के लिए दुख की अनुभूति आवश्यक है। हमें ऐसी कामना करनी चाहिए जो मानवहित से जुड़ी हो। निबन्ध का हर वाक्य सूक्ति जैसा है, हर सूक्ति कुछ सोचने के लिए प्रेरित करती है।

जिंदगी के असली मजे उनके लिए नहीं है जो फूलों की छाँह के नीचे खेलते और सोते हैं । बल्कि फूलों की छाँह के नीचे अगर जीवन का स्वाद छिपा है तो वह भी उन्हीं के लिए है जो दूर रेगिस्तान से आ रहे हैं जिनका कंठ सूखा हुआ, होंठ फटे हुए और सारा बदन पसीने से तर है। पानी में जो अमृत तत्व है, उसे वह जानता है जो धूप में खूब सूख चुका है वह नहीं जो रेगिस्तान में कभी पड़ा नहीं है।

सुख देने वाली चीजें पहले भी थी और अब भी हैं । फर्क यह है कि जो सुखों का मूल्य पहले चुकाते हैं और उनके मजे बाद में लेते हैं, उन्हे स्वाद अधिक मिलता है जिन्हें आराम आसानी से मिल जाता है, उनके लिए आराम ही मौत है। जो लोग पाँव भीगने के खौफ से पानी से बचते रहते हैं समुद्र में डूब जाने का खतरा उन्हीं के लिए हैं। लहरों में तैरने का जिन्हें अभ्यास है वे मोती लेकर बाहर आएँगे ।

चाँदनी की ताजगी और शीतलता का आनंद वह मनुष्य लेता है जो दिनभर धूप में थककर लौटा है, जिसके शरीर को अब रतनाई की जरूरत मालूम होती है और जिसका मन यह जानकर संतुष्ट है कि दिन भर समय उसने किसी अच्छे काम में लगाया है।

इसके विपरीत वह आदमी भी है जो दिन भर खिड़कियाँ बंद करके पंखे के नीचे छिपा हुआ था और अब रात में जिसकी सेज बाहर चाँदनी में लगाई गई है। भ्रम तो शायद उसे भी होता होगा कि वह चाँदनी के मजे ले रहा है, लेकिन सच पूछिए तो वह खुशबूदार फूलों के रस में दिन-रात सड़ रहा है।

भोजन का असली स्वाद उसी को मिलता है जो कुछ दिन बिना खाए भी रह सकता है। 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा', जीवन का भोग त्याग के साथ करो, यह केवल परमार्थ का ही उपदेश नहीं है क्योंकि संयम से भोग करने पर जीवन से जो आनंद प्राप्त होता है, वह निरा

भोगी बनकर भोगने से नहीं मिल पाता ।

बड़ी चीजें बड़े संकटों में विकास पाती है, बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्जा करती हैं । अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने पिता के दुश्मन को परास्त कर दिया था जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय जब उसके पिता के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी।

महाभारत में देश के प्राय: अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे। मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई क्योंकि उन्होनें लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था।

श्री विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि जिंदगी की सबसे बड़ी सिफत हिम्मत है। आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं।

जिंदगी की दो सूरते हैं। एक तो यह कि आदमी बड़े-से-बड़े मकसद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाए और अगर असफलताएँ कदम-कदम पर जोश की रोशनी के साथ अंधियाली का जाल बुन रही हो, तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए।

दूसरी सूरत यह है कि उन गरीब आत्माओं का हमजोली बन जाएँ जो न तो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुख पाने का ही संयोग है, क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूलि में बसती है जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज सुनाई पड़ती है। इस गोधूलि वाली दुनिया के लोग बँधे हुए घाट का पानी पीते हैं, वे जिंदगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते । और कौन कहता है कि पूरी जिंदगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनंद नहीं है?

अगर रास्ता आगे ही आगे निकल रहा हो तो फिर असली मजा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है। साहस की जिंदगी सबसे बड़ी जिंदगी होती है। ऐसी जिंदगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि यह बिल्कुल निडर, बिल्कुल बेखौफ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अडोरा - पडोरा को देखकर चलना यह साधारण जीत का काम है। क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं।

साहसी मनुष्य उन सपनों में भी रस लेता है जिन सपनों का कोई व्यावहारिक अर्थ नहीं है। साहसी मनुष्य सपने उधार नहीं लेता, वह अपने विचारों में रंगा हुआ अपनी ही किताब पढ़ता है। झुंड में चलना और झुंड में चरना, यह भैंस या भेड़ का काम है। सिंह तो बिल्कुल अकेला होने पर भी मगन रहता है।

अर्नाल्ड बैनेट ने एक जगह लिखा है कि जो आदमी यह महसूस करता है कि किसी महान निश्चय के समय वह साहस से काम नहीं ले सका, जिंदगी की चुनौती को कबूल नहीं कर सका, वह सुखी नहीं हो सकता। बड़े मौके पर साहस नहीं दिखाने वाला आदमी बराबर अपनी आत्मा के भीतर एक आवाज सुनता रहता है। एक ऐसी आवाज जिसे वही सुन सकता है और जिसे वह रोक भी नहीं सकता । यह आवाज उसे बराबर कहती रहती है, तुम साहस नहीं दिखा सके, तुम कायर की तरह भाग खड़े हुए । सांसारिक अर्थ में जिसे हम सुख कहते हैं उसका ना मिलना, फिर भी इससे कहीं श्रेष्ठ है कि मरने के समय हम अपनी आत्मा से यह धिक्कार सुनें कि तुममें हिम्मत की कमी थी कि तुममें साहस का अभाव था, कि तुम ठीक वक्त पर जिंदगी से भाग खड़े हुए। जिन्दगी को ठीक से जीना हमेशा जोखिम झेलना है और जो आदमी सकुशल जीने के लिए जोखिम का हर जगह पर घेरा डालता है वह अंतत: अपने ही घेरों के बीच कैद हो जाता है और जिंदगी का कोई मजा उसे नहीं मिल पाता क्योंकि जोखिम से बचने की कोशिश में असल में उसने जिंदगी को ही आने से रोक रखा है।

जिंदगी से अंत में हम उतना ही पाते हैं जितनी कि उसमें पूँजी लगाते हैं। यह पूँजी लगाना जिंदगी के संकटों का सामना करना है, उसके उस पन्ने को उलट कर पढ़ना है जिसके सभी अक्षर फूलों से ही नहीं, कुछ अंगारों से भी लिखे गए हैं। जिंदगी का भेद कुछ उसे ही मालूम है जो यह जानकर चलता है कि जिंदगी कभी भी खत्म न होने वाली चीज हैं।

ओ जीवन के साधको! अगर किनारे की भरी हुई सीपियों से ही तुम्हें संतोष हो जाए तो समुद्र के अंतस्तल में छिपे हुए मौक्तिक को कौन बाहर लाएगा ?

दुनिया में जितने भी मजे बिखर गए हैं, उनमें तुम्हारा भी हिस्सा है। वह चीज भी तुम्हारी हो सकती है जिसे तुम अपनी पहुँच के परे मानकर लौटे जा रहे हो।

कामना का अंचल छोटा मत करो, जिंदगी के फल को दोनों हाथों से दबाकर निचोड़ों, रस की निर्झरी तुम्हारे बहाए भी बह सकती है।

यह अरण्य, झुरमुट जो काटे अपनी राह बना लें।
क्रीतदास यह नहीं किसी का जो चाहे अपना लें।।
जीवन उसका नहीं युधिष्ठिर, जो उससे डरते हैं।
यह उनका जो चरणों पर निर्भय होकर लड़ते हैं ॥

अभ्यास

बोध प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. साहसी मनुष्य किस प्रकार सपने देखता है?
2. लहरों में तैरने वालों को क्या मिलता है?
3. जिंदगी में लगाने वाली पूँजी कौन सी है?
4. पानी में जो अमृत वाला तत्व है, उसे कौन जानता है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. चाँदनी की ताजगी और शीतलता का आनन्द किसे है?
2. ''तेन त्यक्तेन भुंजीथा'' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
3. विंस्टन चर्चिल ने जिन्दगी के बारे में क्या कहा ?
4. लेखक ने साहसी मनुष्य से सिंह की तुलना किस प्रकार की है?
5. अर्नाल्ड बेनेट ने हिम्मत और साहस के संबंध में क्या कहा ?
6. साहसी मनुष्य की क्या पहचान है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्जा करती हैं । उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

2. जिंदगी की कौन-कौन सी दो सूरते हैं ? समझाइए।

3. ''फूलों की छाँह के नीचे खेलने वालों के लिए जिंदगी के असली मजे नहीं है।'' उदाहरण द्वारा इस कथन की पुष्टि कीजिए ।

4. जिंदगी को सही ढंग से जीने के लिए लेखक द्वारा दिए गए सुझावों पर अपना मत व्यक्त कीजिए।

5. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए -

   अ. ''पानी में जो अमृत तत्व है उसे वह जानता है जो धूप में खूब सूख चुका है, वह नहीं जो रेगिस्तान में कभी पड़ा ही नहीं।''

   ब. झुण्ड में चलना और झुण्ड में चरना यह भेड़ और भैंस का काम है सिंह तो बिल्कुल अकेला होने पर भी मगन रहता है।

भाषा अध्ययन -

1. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग अलग कीजिए-

   सुनयन, अन्याय, पराधीन, अहिंसा, विदेश, प्रगति, विराग ।

2. अनु, परि, सु, कु, उपसर्ग जोड़कर दो-दो नए शब्द बनाइए ।

ध्यान से पढ़िए :

आर्थिक संघर्षों ने हमारे दिमाग को इतना भोथरा बना दिया है कि संस्कृति की सुकुमार दुनिया हमारी पथराई आँखों के सामने आकर भी नहीं आ पाती । गेहूँ हमारी आँखों पर इस कदर छाया हुआ है कि गुलाब को हम देखकर भी नहीं देख पाते । गेहूँ तक आदमी और जानवर में फर्क नहीं है- आदमी को आदमी बनाया गुलाब ने।

अब जानिए :

* **ऊपर रेखांकित शब्दों में चार प्रकार के शब्द सम्मिलित हैं ।**

1. आर्थिक, संघर्ष, संस्कृति, सुकुमार ये शब्द जो संस्कृत से ज्यों के त्यों हिन्दी भाषा में सम्मिलित हैं । ये शब्द **तत्सम** कहलाते हैं ।
2. आँख और गेहूँ शब्द संस्कृत से परिवर्तित होते हुए हिन्दी भाषा में आए हैं । ये शब्द **तद्भव** हैं ।
3. भोथरा शब्द संस्कृत से नहीं आया बल्कि आंचलिक क्षेत्र की बोलियों से आया है। इस प्रकार के शब्द **देशज** हैं।
4. दिमाग, कदर, आदमी, जानवर, और फर्क शब्द विदेशी भाषाओं से आए हैं । ये शब्द **विदेशी** (आगत) शब्द हैं।

परिभाषा :

तत्सम : संस्कृत के वे शब्द जो हिन्दी में ज्यों के त्यों ग्रहण किये गये हैं, तत्सम कहलाते हैं ।

तद्भव : संस्कृत के वे शब्द जो किंचित परिवर्तन के साथ हिन्दी में ग्रहण किये गये हैं, तद्भव कहलाते हैं।

देशज : आंचलिक भाषाओं- बोलियों से ग्रहण किये गये है वे शब्द देशज शब्द कहलाते हैं ।

विदेशी : विदेशी भाषाओं के वे शब्द जो हिन्दी में प्रयोग किए जाते हैं, विदेशी शब्द या आगत शब्द कहलाते हैं ।

3. निम्नलिखित शब्दों से तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी शब्द छाँटकर लिखिए –

फूल, छाँह, जिंदगी, ख़ौफ, निर्भय, उपदेश, रेल, टेबिल, रोशनी, पाँव, पंख, कब्जा, मकसद

4. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए –

आँसू, पूरब, मोर, सपना, धीरज

5. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए –

आदान, उर्वर, प्रवृत्ति, कृतज्ञ, कृत्रिम, संक्षेप, रक्षक

योग्यता विस्तार

1. साहस और वीरता से संबंधित सूक्तियों का संकलन कर फाइल बनाइए ।
2. साहसी व्यक्ति से संबंधित कहानी, लेख, कविता आदि खोजकर पढ़िए ।
3. 'गणतंत्र दिवस' पर सम्मानित होने वाले बच्चों की सूची बनाइए।
4. 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत' विषय पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखकर अपने शिक्षक को दिखाइए ।

शब्दार्थ

जोखिम – खतरा, मौक्तिक-मोती, क्रीतदास-खरीदा हुआ गुलाम, निर्झरी-झरना, खौफ – भय/डर, तरलाई – शीतलता/तरलता, लाक्षागृह – लाख का घर (जिसे कौरवों ने पाण्डवों को मारने के लिए बनवाया था) मक़सद – उद्देश्य, मद्धिम – धीमी, अरण्य – जंगल

* * *